ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

मन्त्राश्रुत्यं चरामसि। सामवेद 176

हम वेद मन्त्र के अनुसार आचरण करें।
We should behave & Perform in accord with the advice of Vedic hymns.

वर्ष 38, अंक 10 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 12 जनवरी, 2015 से रविवार 18 जनवरी, 2015
विक्रमी सम्वत् 2071 सृष्टि सम्वत् 1960853115
दयानन्दाब्द : 191 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल :aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के 12 वर्षों तक प्रधान पद की जिम्मेदारी संभालने वाले
युवा वैदिक विद्वान्, आर्यजगत् के विख्यात कर्मठ आर्यनेता, प्रेरक
ब्र. राजसिंह आर्य जी की श्रद्धांजलि सभा सम्पन्न
हजारों लोगों ने पहुंचकर अर्पित किए श्रद्धासुमन

सब आर्यजनों को पूर्व विदित है कि 5 जनवरी, 2015 को आर्यसमाज के एक महान नेता ब्र. राजसिंह आर्य जी का परलोक प्रयाण हो गया था। आज उनकी शोक सभा श्रद्धांजलि सभा दोपहर 2 से 5 बजे तक एस. एम. आर्य पब्लिक स्कूल पंजाबी बाग पश्चिम में हजारों लोगों की उपिस्थति में सम्पन्न हुई।

दोपहर 2 बजे आचार्य ऋषिपाल शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ सम्पन्न हुआ। पश्चात् शोक सभा का कार्यक्रम आरम्भ हुआ। मंच का संचालन करते हुए श्री विनय आर्य जी ने अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करने हेतु मंच पर उपस्थित संन्यासीगण एवं अन्य विद्वत्गण तथा राजनेताओं को आमन्त्रित किया। जिनमें स्वामी सदानन्द सरस्वती (दीनानगर) ने अपनी श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि जो आएगा वह अवश्य जाएगा, मनुष्य को ऐसा कर्म करना चाहिए जिससे समाज को एक नई दिशा मिले। हम आचार्य राजसिंह आर्य जी के जीवन से यही शिक्षा लें। वे वास्ताव में कर्म से संन्यासी थे कपड़ों से नहीं। उन्होंने कहा कि चंगे कर्म करने चाहिए। लोग कहते हैं कि मानव खाली हाथ आया है और खाली हाथ जाएगा। लेकिन ब्रह्मचारी जी कहते थे, न कोई खाली हाथ आया है और न खाली हाथ जाएगा।

सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान संचालक स्वामी देवव्रत सरस्वती जी ने अपनी पुष्पांजलि देते हुए कहा कि ब्र. राजसिंह जी कहते थे कि मैं आजीवन आर्यवीर दल का वीर रहूंगा। जहां भी रहूंगा वहीं आर्य वीर दल का कार्य करुंगा। जब वे सार्वदेशिक आर्य वीर दल के महामन्त्री बने तो उन्होंने अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन कराया जिसका श्रेय उन्हीं को जाता है।

ठाकुर विक्रम सिंह जी ने अपनी स्मृतियों को ताजा करते हुए कहा कि मैं ब्र. राजसिंह जी को बचपन से जानता हूं। यदि किसी कार्य करने की बात हो तो वह कहते थे इसे मैं करूंगा। उन्होंने स्वामी निरंजन देव तीर्थ की चुनौती पर शंकराचार्य से शास्त्रार्थ भी किया। उस शास्त्रार्थ की पुस्तक का प्रकाशन भी उन्होंने स्वयं कराया।

स्वामी यज्ञ मुनि जी ने अपनी भावांजलि अर्पित करते हुए कहा कि ब्र. राजसिंह जी ने अपना सारा जीवन आर्यसमाज और उसकी शक्ति को आगे बढ़ाने में किया। हम उनसे प्रेरणा लेकर उनके कार्यों को आगे बढ़ाएं। उनके प्रति हमारी यही सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

आर्य वीरांगना दल दिल्ली की संचालिका श्रीमती सुनीति आर्या ने अपने भाव व्यक्त करते हुए कहा कि वे सबसे ज्यादा उन लोगों के प्रेरणा स्रोत रहेंगे जिनके पास बहुत डिग्रियां तो नहीं है और वे समाज में उत्कृष्ट कार्य करना चाहते हैं। ब्र. राजसिंह जी ने बहुत पुरुषार्थ करके जिस प्रकार ब्रह्मचर्य प्रतिज्ञा एवं साप्ताहिक सत्संगों में अपनी उपस्थिति की प्रतिज्ञा को निभाया, वह अपने आप में प्रेरक है।

डॉ. सुरेन्द्र कुमार, कुलपति, गुरुकुल कांगड़ी ने अपनी श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए कहा कि ब्र. राजसिंह आर्य में कुछ ऐसे गुण थे जिससे लोग उनकी ओर अनायास ही आकर्षित हो जाते थे। एक महत्वपूर्ण गुण यह भी था कि वे एक महान संगठनकर्ता थे जोकि देश-विदेशों में अपने संगठन को जोड़कर कार्य करते थे। उनका एक स्वप्न था 'पुण्य भूमि गुरुकुल कागड़ी को आर्यों का तीर्थ स्थान बनाना'। डॉ. सुरेन्द्र कुमार ने कहा कि गुरुकुल कांगड़ी इसके लिए पूरा प्रयास करेगा।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान आचार्य बलदेव जी ने अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि उच्च व्यक्तित्व के धनी आचार्य राजसिंह जी ऐसे महापुरुष थे जिन्होंने आर्यसमाज को देश में ही नहीं विदेशों में भी फैलाया है ऐसे व्यक्ति को हमेशा स्मरण किया जाएगा।

आर्यवीर दल दिल्ली के महामन्त्री श्री बृहस्पति आर्य ने कहा कि ब्र. जी का सभी के साथ व्यक्तिगत सम्बन्ध रहा। वे ऐसे महान नेता थे जिनका राजनैतिक, सामाजिक शैक्षणिक क्षेत्रों में पूर्ण वर्चस्व रहा।

जयदीप आर्य (भतीजा) ने कहा कि गर्दिश में वे चमकते हुए सितारे थे। वे कहते थे कि घर से पुत्री और शरीर से आत्मा को खुशी से विदा करना चाहिए। हम उन्हें अपने हृदय में सदा ही जीवित रखेंगे।

स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती (सांसद -सीकर) ने अपने श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए कहा कि ब्रह्मचारी राजसिंह जी दृढ़ संकल्पी, ईश्वर विश्वासी थे। बड़े से बड़े कार्य को करने की ठान लेते थे। यदि कोई कहता कि यह कैसे होगा तो वे कहते कि ईश्वर सब करेगा। जो उपहास और विरोध करते वे भी कार्य सम्पन्न होने पर सहानुभूति प्रकट करते थे। इसलिए आज उनसे प्रेरणा लेकर संकल्प लें कि हम ईश्वर विश्वासी बनें और उनके कार्यों को आगे बढ़ाएं। यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

स्वामी ब्रह्ममुनि, प्रधान महाराष्ट्र सभा ने कहा ब्र. राजसिंह महर्षि दयानन्द के प्रति श्रद्धावान थे। उनके माता-पिता धन्य हैं, जिन्होंने ऐसे पुत्ररत्न को जन्म दिया। जिन्होंने भारत वर्ष में ही नहीं विदेशों तक आर्यसमाज के कार्यों को विस्तार दिया। और अब हम उनके अधूरे प्रकल्पों को

- शेष पृष्ठ 2, 4-5 पर

अतिथि सम्पादकीय

अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता बनाम पेरिस का हमला

सम्पूर्ण विश्व में पेरिस में हुए हमले में 'शार्लि अब्दो' पत्रिका के 10 कार्टूनिस्टों की हत्या की कड़े शब्दों में आलोचना की गई है एवं इसे अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर हमला बताया गया। निश्चित रूप से आतंकवादियों की हिंसक प्रतिक्रिया निंदनीय है। भारत का 'सेक्युलर' मीडिया अपनी चिर्परिचित मनोवृति में आतंकी हिंसा को पीके फिल्म के विरुद्ध हुई प्रतिक्रिया से तुलना करने में अपनी बड़ाई समझ रहा है। परन्तु अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के मूलभूत उद्देश्य से प्राय: सभी सेकुलरवादी अनभिज्ञ है। इस लेख का उद्देश्य अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के उद्देश्य को भारतीय इतिहास की सहायता से समझना है।

इतिहास में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के उद्देश्य को अगर समझना है तो स्वामी दयानंद की विचारधारा के माध्यम से समझना चाहिए। अंग्रेजी राज के काल में मुसलमानों ने अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का फायदा उठाते हुए सबसे पहले 1845 ई. में हिन्दू धर्म की आलोचना करते हुए 'रद्दे हनूद' (हिन्दू मत का खंडन) नामक किताब लिखी जिसका प्रतिउत्तर चौबे बद्रीदास ने रद्दे मुसलमान (मुस्लिम मत का खंडन) नामक पुस्तक लिख कर दिया। इसके बाद अब्दुल्लाह नामक व्यक्ति ने 1856 ई में हिन्दू देवी देवी-देवताओं की कठोर आलोचना और निंदा करते हुए 'तोहफतुल-हिन्द' (भारत की सौगात) के नाम से उर्दू में प्रकाशित की। पंडित लेखराम जी के अनुसार इस पुस्तक से अनेक अज्ञानी हिन्दू मुसलमान बने। ऐसी विकट स्थिति में मुरादाबाद निवासी मुंशी इन्द्रमणि हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए 'तोहफतुल-इस्लाम' (इस्लाम का उपहार) के नाम से फारसी में दिया। सैय्यद महमूद हुसैन ने इसके खंडन में 'खिलअत-अल-हनूद' नामक पुस्तक छापी। उसके प्रतिउत्तर में मुंशी जी ने 'पादाशे इस्लाम' नामक पुस्तक 1866 में छापी। इसके तीन वर्ष पश्चात मुंशीजी ने एक मुसलमान द्वारा लिखी पुस्तक 'असूले दीने हिन्दू' (हिन्दू धर्म के सिद्धांत) का उत्तर देने के लिए 'असूले दीने अहमद' (इस्लाम के सिद्धांत) के नाम से लिखी।

- शेष पृष्ठ 7-8 पर

युवा शक्ति एवं भक्ति का समन्वयक : ब्रह्मचारी राज सिंह आर्य

– स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती

प्रातः कालीन दिनचर्या में ईश्वर प्रणिधान द्वारा साधना के पथ का पथिक, यज्ञ एवं मोम का आधार बनाकर जीवन के संतुलन को समाज के लिए अहर्निश सुदृढ़ करने का स्वप्न साकार करने के लिए प्रयत्नशील व्यक्तित्व, कुर्ता एवं धोती धारण कर गौरिक उत्तरीय वस्त्र से सुशोभित होकर प्रसन्नवदन सदैव अभ्यागत से मिलकर अपनी प्रसन्नता की अभिव्यक्ति से शोभायमान रूप को देखते ही ब्र. राज सिंह आर्य की प्रतिमूर्ति दृष्टिगोचर होने लगती है। वे स्वयं निर्मित होकर समाज के निर्माण में विश्वास रखते थे उसी के लिए उनका चिन्तन था उसी के लिए उनकी दिनचर्या थी उसी के लिए उनका प्रयास दिनचर्या को सार्थकता में परिवर्तित करता था। वे बाजी के कलाकार थे वे हृदय से संपृक्त होकर अपनी भावनायें प्रकट करते हुए जब प्रवचन करते थे वो स्वयं भी रोकर श्रोताओं को भी रूलाने का सामर्थ्य रखते थे। वे वीर रस की भावनाओं से युवाओं में उत्साह भी पैदा करने का सामर्थ्य रखते थे। समाज निर्माण का स्वप्न साकार करने के लिए जब अपनी योजनायें प्रारम्भ करते थे तो श्रेष्ठ लोग अपनी उदारता से उनके सहयोगी बनने के लिए आतुर हो उठते थे और उनकी इच्छानुसार उन्हें महाराणा प्रताप समझकर स्वयं भामाशाह बनने का सौभाग्य अनुभव करते थे। यह उनके शब्दों के संयोजन का चमत्कार जब हृदय से मिलकर आत्मीय रूप में प्रकट होता था। तो आबाल वृद्ध प्रभावित होकर उनके गुणगान के लिए बाध्य हो उठता था। सार्वदेशिक आर्यवीर दल में लम्बे समय तक उनके साथ रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। वे महामन्त्री पद पर रहकर उसका संवर्द्धन करते रहे और दिल्ली में एक महासम्मेलन करके आर्यजगत में नवीनता का संचार किया। प्रभु की परीक्षा में भी उत्तीर्ण होकर दिखाया स्वामी देवव्रत जी प्रधान संचालक जी की अध्यक्षता में अभूतपूर्व दृश्यों का वातावरण सदैव अविस्मरणीय रहेगा उसी से उन्हें आर्यजगत में विशेष सम्मान भी प्राप्त हुआ। राज नेताओं का भी सहयोग प्राप्त किया और अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन करने का स्वप्न भी साकार करने का सौभाग्य प्राप्त कर लिया। जो दिल्ली रोहिणी में एक उदाहरण बनकर अपने नाम को सार्थक करने में सफल हुए उनका व्यक्तित्व प्रभावशाली था वे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष पद पर सुशोभित रहे लेकिन देश-विदेश में वेद प्रचार के कार्य में भी सदैव प्रयास करते रहे। आपकी योजनाओं में सहयोगी महानुभावों की सूची बहुत लम्बी है लेकिन विनय आर्य महामन्त्री, धर्मपाल आर्य (वर्तमान प्रधान), जैसों का सहयोग न मिलता तो सम्भवतः इतना बड़ा कार्य सम्भव नहीं था। अतः आप को सर्वात्मा सहयोगी मिले यह भी आप का सौभाग्य ही कहा जाएगा। आप इतने व्यस्त एवं उच्च स्तरीय नेता बनने के बाद भी सामान्य ग्रामीण आर्य समाजों के सम्मेलनों में भी जाने में उत्साह पूर्वक प्रसन्नता से स्वीकृति प्रदान करके आर्यों को उत्साहित करते थे। एक दिन चर्चा करते हुए अचानक बोले कि आपने अपना गुरुकुल पूठ कभी नहीं दिखाया। मैंने कहा कि गरीबों के यहां कौन जाता है? आप तो बड़े-बड़े शहरों व नगरों तथा विदेशों में ही अधिक व्यस्त रहते हैं। तो बोले एक बार बुलाकर तो देखो, जरूर आऊंगा। मैंने मार्च की तिथियां लिखवा दी, न विज्ञापनों में नाम छपवाया और न ही निमन्त्रण पत्र ही भिजवाया यही मानकर कि लोग मिल जाते है तो औपचारिकता वश कह ही देते हैं। लेकिन सम्मेलन के पूर्व ही सायंकाल एक सज्जन के साथ गुरुकुल के मुख्य द्वार पर मैनें ब्र. राज सिंह आर्य जी को देखा तो महद् आश्चर्य युक्त प्रसन्नता को मैं छिपा नहीं सका और पूरे तीन दिन तक वे गुरुकुल में रहे। सामान्य रूप से रहते हुए अनुभव नहीं होने दिया कि मैं कोई विशेष सुविधाओं की अपेक्षा रखता हूँ। तीनों दिन आपके विचारों से आर्य जनता लाभान्वित हुई और उनके प्रवचनों को आज भी लोग याद करते हैं। आप की उदारता और महानता के लिए आज भी मेरे हृदय में जो सम्मान है उसे मैं कभी भूला नहीं सकूंगा। चलते समय जब दक्षिणा देने का प्रयास किया तो बोले कि गुरुकुल महर्षि दयानन्द सरस्वती के विचारों को फैलाने की फैक्ट्री है। इन्हें सहयोग देने की बात होनी चाहिए, लेने को तो बहुत बड़ी दुनिया पड़ी है। यहां तो देने की बात होनी चाहिए। आप ने तो किराया लेना भी स्वीकार नहीं किया। तब से मुझे लगा कि वास्तव में यह मिशनरी भावना से कार्य करने में इसीलिए सफल है कि यथा योग्य संस्थाओं को प्रोत्साहन प्रदान करके उनका मनोबल भी बढ़ाते हैं कोई इतना बड़ा महान वैसे ही हवा में नहीं बन जाता है। आपकी दिनचर्या, आपका जीवन, आर्य समाज एवं आर्यवीर दल के लिए ही समर्पित रही। बैठक में आप की योजनाओं को सुनने में भी अच्छा लगता था और आपकी ही इच्छा के प्रति सभी अधिकारी प्रभावित होते थे। दिल्ली में गुरुकुल गौतमनगर अथवा किसी आर्य समाज के कार्यक्रम में, बैठक में जहां भी मिले सदैव आर्य समाज के कार्य को आगे बढ़ाने की योजनाओं की तैयारी करते रहे और उसी के लिए आपका जीवन समर्पित रहा। अभी आर्य सन्देश में समाचार पढ़ा कि ब्र. राज सिंह ने धर्मपाल आर्य को दिल्ली सभा का प्रधान बनाने के लिए प्रस्ताव प्रस्तुत किया और सर्वसम्मत से निर्वाचन सम्पन्न हो गया और यह परम्परा स्थापित होनी चाहिए पढ़कर प्रसन्नता हुई और विचार कर ही रहा था कि उन्हें फोन पर बधाई दूंगा लेकिन किसकों पता था कि फोन पर जो सूचना आ रही है वो इतनी दुःखद है जिसे प्रत्येक आर्य सुनकर हतप्रभ रह जायेगा। मुझे भी ऐसी ही दुःखद अनुभूति हुई। पूरा गुरुकुल शोकमय हो गया और शान्तयज्ञ तथा शोक सभा करके उनके प्रति मौन धारण किया आज कुछ उनकी पुरानी स्मृतियों में खो जाने पर जो भी विचार मन में आये उन्हें उनके प्रति स्मृति की धरोहर में सुरक्षित रखते हुए आर्यजनों तक निवेदन करना चाहता हूँ कि आर्य समाज की प्रतिष्ठा आज आर्यों एवं समाजों को अधिकारियों के हाथों में सुरक्षित है। आर्य समाज के उपदेशक, विद्वान, संन्यासी, आपके माध्यम से ही इस दिशा में आपके प्रेरणा श्रोत बन सकते है। ब्र. राजसिंह समर्पित व्यक्तित्व के प्रति ''आर्यमित्र'' परिवार, आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 एवं गुरूकुल पूठ तथा आर्यवीर दल उ0प्र0 की ओर से उन्हें अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि प्रदान करता हुआ परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि प्रभु हम सभी आर्यों को भी इसी प्रकार का उत्साह प्रदान करें।

कहीं न कहीं कोई त्याग, तप, बल, साधना, भक्ति की शक्ति, आत्मा की शक्ति ही तो सामाजिक शक्ति को बढ़ाने में सहयोगी बनती है और उसके लिए उन्होने अपने जीवन को तपाया था। अपनी साधना से आत्म बल को बढ़ाया भी तभी समाज सेवा का इतना बड़ा कार्य सम्भव कर सकें। आपका दिल्ली सरकार के पूर्व मुख्यमंत्री साहिब सिंह वर्मा से अत्यन्त घनिष्ठ सम्बन्ध था। दिल्ली के सम्मेलनों में साक्षात् अनुभव किया है कि आपके फोन पर ही सहजभाव से परिवारिक व्यक्ति की तरह वार्ताकर लेते थे। जब आर्यवीर महासम्मेलन में तूफान से सारा कार्यक्रम स्थल क्षतिग्रस्त हो गया था तभी उन्होंने स्वयं आकर स्थल का निरीक्षण किया और सभी आर्य अतिथियों की आवास एवं भोजन की व्यवस्था की थी। बीच बीच में फोन पर वार्ता होते हुए देखा भी कुशलता लेते रहे दिल्ली के आर्य महासम्मेलन में भी उनका पूरा सहयोग प्राप्त किया था यह सब चमत्कार देश विदेश में भी अनुभव किया जा सकता है। अतः उनका स्वाध्याय, प्रवचन एवं व्यवहार यह सिद्ध करता है कि उन्होने महर्षि पतंजलि के सूत्र को जीवन में साक्षात् किया कि **विध्य चतुर्भि प्रकारह उपयुक्ती भवति- आगाम कालेन स्वाध्याय कालेन प्रवचन कालेन व्यवहार कालेनेति ---।** आर्यवीर दल के प्रान्तीय सम्मेलनों में भी हरियाणा, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, अवश्य जाते थे। मेरठ के सम्मेलन में आप का स्वास्थ्य ठीक नही था। फिर भी आये और आर्यवीरों को उत्साहित किया। सार्वदेशिक आर्यवीर शिविरों में भी आप प्रसन्नता से जाते थे।

– गुरुकुल पूठ गढ़ हापुड़ (उ.प्र.)

प्रथम पृष्ठ का शेष

पूर्ण करें।

राजकुमार आर्य, पतंजलि योगपीठ हरिद्वार ने स्वामी रामदेव जी के सन्देश को इस प्रकार व्यक्त किया कि वे एक समर्पित व्यक्ति थे। जो आर्यसमाज के लिए बड़ी क्षति है। हमें आर्यसमाज के प्रति उनकी विचारधारा को आगे बढ़ाने का प्रयास करना चाहिए।

आर्य वीर दल उ.प्र. के प्रमोद आर्य (वाराणसी) ने कहा कि वे एक प्रखर वक्ता, विद्वान तथा अन्तर्राष्ट्रीय वक्ता होते हुए एक जमीनी कार्यकर्ता भी थे। हम उनके प्रति अपार श्रद्धा रखते हैं और उनके मार्ग पर चलने का संकल्प लेते हैं।

योगेश आर्य (आस्ट्रेलिया) ने कहा आज हमें बहुत दुःख है कि ब्र. राजसिंह आर्य आज हमारे बीच नहीं हैं। फिर भी हम संकल्प लेते हैं कि हम उनके अधूरे कार्य को पूरा करेंगे।

डॉ. योगानन्द शास्त्री ने कहा कि ऐसे व्यक्तित्व थे कि आर्यसमाज में उनकी गहरी पैठ थी। अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन मे विदेशी मेहमानों की मेहमाननवाजी के बारे में उन्होंने दिल्ली की मुख्यमन्त्री से आग्रह किया तो उन्होंने सहर्ष स्वीकार कर लिया। वास्तव में उद्भट्ट दयानन्दी थे।

शैलेष आर्य (हॉलैण्ड) ने कहा कि उन्होंने कृण्वन्तो विश्वमार्यम् के लिए अपने सम्पूर्ण जीवन को लगा दिया। हम उनको शत्-शत् नमन करते हैं।

जितेन्द्र भाटिया ने कहा लाखों युवाओं को यज्ञ और आर्यवीर दल से जोड़ा। मैं उस माता को नमन करता हूं जिसने ऐसे त्यागी पुरुष को जन्म दिया। आर्य वीर दल को दिए गए उनके सहयोग को हमेशा याद किया जाएगा।

प्रकाश आर्य, मन्त्री, सार्वदेशिक सभा ने कहा आज ब्र. राजसिंह आर्य जी का हमारे बीच न होना एक बड़े हादसे से कम नहीं है। हर उम्र और हर पद के व्यक्तियों से उनका सम्पर्क था। ऐसे लोग मृत्यु के बाद भी जीवित रहते हैं - यस्य कीर्ति स जीवति। अर्थात् जिसका यश है वही जीता है। वे इस युग के मिश्नरी थे। सच्चे दयानन्दी थे। उन्होंने सूई का कार्य किया, जिससे समाज को जोड़ा जा सके। हम उनके कार्यों को समझें और आर्यसमाज के कार्य को बढ़ाने में सहयोग दें।

वैदिक विद्वान डॉ. महेश विद्यालंकार ने उनके कार्यों को याद करते हुए कहा कि वे चलती फिरती आर्यसमाज थे। वे जिससे एक बार मिलते उसको अपना बना लेते थे। हम संकल्प लें कि उनके अधूरे कार्य को आगे बढ़ाएं।

डॉ. रामप्रकाश, कुलाधिपति, गुरुकुल कांगड़ी विवि. ने कहा कि ब्र. राजसिंह आर्य का निधन आर्यसमाज के लिए एक बहुत बड़ी क्षति है यह कैसे पूरी होगी? उनकी हमें बहुत जरुरत थी। जिस परिवार ने ऐसा रत्न आर्यसमाज के लिए दिया मैं उनके आगे नतमस्तक हूँ। हम उस रास्ते पर चलें जिस पर वे वाणी से नहीं कर्म से चले। यही हमारी उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

अजय सहगल, टंकारा ट्रस्ट ने कहा कि मुझे वह क्षण आज भी याद है जब मुझे लाठी चलाना सिखाते थे। वे विद्वान और संगठन कर्ता थे। श्री धर्मपाल आर्य एवं श्री विनय आर्य के साथ त्रिमूर्ति के रूप में कार्य कर रहे थे। उनमे से एक स्तम्भ गिर गया है मैं उन्हें शत्-शत् नमन

– शेष पृष्ठ 4 पर

खामोश हो चुकी है एक 'सिंह' की गर्जना

- कु. कञ्चन आर्या (एम.ए., एम.एड.)

आर्य समाज के सार्वजनिक मंचों पर जनता को ललकारने और उद्‌बोधन देने के लिए सिंह की तरह गर्जने वाले **आचार्य ब्र. राजसिंह जी** की गर्जना अब सदा के लिए खामोश हो चुकी है। क्योंकि आर्य समाज व ऋषि दयानन्द का दीवाना यह क्रान्तिकारी नेता हमसे सदा-सदा के लिए विदा हो चुका है। 5 जनवरी, 2015 की प्रात: लगभग 12:30 बजे यह महान् आत्मा अपने इस भौतिक शरीर से कूच कर हमें रोता-बिलखता छोड़ गई है। नियति के शाश्वत नियम के कारण सभी प्राणियों के शरीरों का नष्ट हो जाना अनिवार्य है, किन्तु असमय में ही इस मानवता और विनम्रता की मूर्ति के काल का ग्रास हो जाने से समाज, राष्ट्र और विश्व की जो महती क्षति हुई है, उसकी पूर्ति होना सर्वथा असम्भव है।

13 वर्ष की अल्प आयु से ही गो-रक्षा, नशा मुक्ति आदि समाज-सुधार के कार्यों को लेकर आप **सामाजिक क्षेत्र** में कूद पड़े थे। नवयुवकों की नशामुक्ति एवं अन्य जनजागरण के कार्योंके लिए आपने सर्वप्रथम **'युवक परिषद्'** की स्थापना की। मद्यपान, नशा आदि सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ आपने तिहाड़ और माछरा जेलों में चार-चार दिन के लिए गिरफ्तारी भी दी। समाज-सुधार के कार्यों के साथ-साथ जन सामान्य और विशेषकर युवकों को अध्यात्म एवं भारतीय संस्कृति की ओर आकृष्ट करना आपका मुख्य उद्‌देश्य था। इसके लिए आपने विश्व स्तर पर युवकों को जोड़ने के लिए सन् 1998 में सर्वप्रथम एक **अन्तर्राष्ट्रीय आर्य वीर महासम्मेलन** का आयोजन भी किया था। यह सम्मेलन बहुत सफल और प्रेरक रहा। इसके पश्चात् इन्होंने **सन् 2006** में दिल्ली के रोहिणी स्थित **जापानी पार्क** से **अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलनों** की परम्परा प्रारम्भ की, जिनका सफल आयोजन प्रतिवर्ष देश-विदेशों में किया जा रहा है।आर्य वीरदल के शिविरों के माध्यम से अनेक युवक-युवतियों के चरित्र और जीवन-निर्माण में क्रान्तिकारी परिवर्तन किये। अनेकों की जीवन-धारा को मोड़ कर उनके परिवारों को स्वर्गतुल्य बना दिया।

सन् 2003 में जब आपने **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पद** को संभाला, उस समय विरोधी गुटों के कारण आर्य समाज की नैया मंझधार में डगमगा रही थी। तब भी तीव्र वैराग्य होने के कारण आप गम्भीर उपासना के लिए गंगोत्री के जंगलों में लम्बे काल के लिए जाने को तैयार थे, परन्तु आर्य समाज की इस अत्यधिक दयनीय स्थिति को सम्भालने के लिए इस पद का उत्तरदायित्व उठा लिया। अनेकों बार उपासना की इस क्षति के लिए पश्चात्ताप के रूप में मैंने इनकी अश्रुधाराओं को प्रत्यक्ष भी किया। नवम्बर, 2014 तक इस प्रधान पद पर आसीन रहे। इस लम्बे काल में जहाँ आपने आर्य समाज की डगमगाती नैया को सुस्थिर कर दिया वहीं अन्य अधिकारियों के सहयोग से अनेक क्रान्तिकारी और ऐतिहासिक परिवर्तन और सुधारकर आर्य समाज का कायाकल्प कर दिया।

आध्यात्मिकता ब्र. राजसिंह आर्य के जीवन में ही रची-बसी हुई थी। आपके आध्यात्मिकता से ओत-प्रोत प्रवचनों को सुनकर श्रोता भावविभोर हो आनन्दामृत में सराबोर हो जाते थे, ऐसा मेरा प्रत्यक्ष अनुभव है। सभी इनको एक बार सुन लेने पर दुबारा सुनने को लालायित रहते थे।आपने आर्यसमाज के मंचों से संगीतमय कथाओं का आरम्भ किया, जो श्रोता को मनोरंजन के साथ-साथ अध्यात्म की ओर स्वाभाविक रूप से आकृष्ट करता था। इनकी सदैव यह इच्छा रहती थी कि वैदिक प्रवचनों को आर्यसमाजों की चारदीवारी से बाहर खुले मैदानों में प्रचारित किया जाये। इसके लिए उन्होंने लोगों को प्रेरित भी किया। संकीर्ण भावना से दूर खुले दिमाग वाले आचार्य राजसिंह को मन्दिर के मंचों से प्रचार करने में भी कोई संकोच नहीं था। इस प्रकार, आप सामाजिक ही नहीं, अपितु आध्यात्मिक सफल कर्मठ नेता सिद्ध हुए। सन् 1990 में, **गाजीपुर** में 61 दिनों के लिए केवल मात्र छाछ का सेवन करके तथा सन् 2002 में, तीन मास के लिए **गंगोत्री** के घने जंगलों की एक गुफा में **अदर्शन मौन और गायत्री की साधना** की थी। इसके फलस्वरूप, आपको जिस अन्तर्ज्ञान की प्राप्ति हुई , उस प्रसाद को इन्होंने बड़ी उदारता के साथ जनसामान्य में बाँटा। मैं ऐसे अनेक लोगों को जानती हूँ, जो इनके प्रवचनों के प्रभाव से नास्तिक से आस्तिक बन गये। अनेक लोगों की हत्या करने वाला एक डाकू सामान्यमानव की ज़िन्दगी जी रहा है। परिवार से बिछुड़े कई लोग अपने परिवार के साथ मिल गये। यह सब ईश्वर प्रदत्त इनकी प्रभावशाली, रोचक और सरल वक्तृत्व शैली का प्रभाव था, जिसे एक बच्चा और अनपढ़ भी आसानी से समझ जाता था। देश-विदेश के अनेकों युवक-युवतियों को संध्या, यज्ञ आदि सिखाकर आध्यात्मिक दिशा प्रदान करना इनके व्यक्तित्व की असाधारण योग्यता थी।

ब्र. आचार्य राजसिंह जी की **यज्ञ करवाने की शैली बहुत ही रोचक और प्रेरक** थी। यज्ञ की प्रत्येक प्रक्रिया की व्याख्या इतनी अधिक आध्यात्मिक भावना के साथ करते थे कि कोराकर्मकाण्डी याज्ञिक भी ईश्वर से जुड़ा रहता था। **देव-यज्ञ** होने के कारण, इनका विश्वास था कि यज्ञ में डाली गई घृत एवं सामग्री की आहुतियाँ देवताओं का भोजन हैं। अत: इनमें प्रयोग की सभी वस्तुएँ बढ़िया किस्म की ही होनी चाहिए। इन्हें इस कार्य में किसी प्रकार की कंजूसी और समझौता मंजूर नहीं था। यज्ञ प्रारम्भ करने से पूर्व **पाँच चेतन देवताओं** (माता, पिता, आचार्य, अतिथि और पति के लिए पत्नी और पत्नी के लिए पति) की फूल-माला पहना कर तथा चरणों में माथा टिका कर क्रमश: पूजा अवश्य करवाते थे। छोटे-बड़े हर यज्ञ में आप अपने यजमान को प्रेरणा प्रदान करते हुए पाँच प्रकार की संकल्प की दक्षिणा अवश्य माँगते थे— 1) दोनों समय ईश्वर की उपासना, 2)माँस, अंडा, बीड़ी, सिगरेट, गुटका, तम्बाकू आदि व्यसनों से दूर रहना, 3) घर में माता, पिता, दादा, दादी आदि बड़े-बुजुर्गों की सेवा करना, 4) प्रत्येक रविवार को आर्य समाज के सत्संग में जाना, तथा 5) ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों का स्वाध्याय करना। इस प्रकार, बहुत ही रोचक और सरल ढंग से यजमानों और जनसामान्य को अध्यात्म और ठीक मार्ग की ओर मोड़ने की कला में आप पारंगत थे। अनेक परिवारों में इन्हीं की प्रेरणा से दैनिक यज्ञ की परम्परा का आरम्भ हुआ। इनका चिन्तन मौलिक था, जो केवल शास्त्रों पर नहीं, अपितु इनके अपने अनुभव और अन्त:प्रेरणा पर आधारित होता था। त्रैतवाद जैसे वैदिक सिद्धान्तों और आध्यात्मिकता की गहराइयों को भी बहुत ही सहजता से जिज्ञासु के अन्दर बिठा देते थे। युवापीढ़ी तो इनसे विशेष रूप से आकृष्ट हो जाती थी।

ईश्वर के प्रति अटूट विश्वास इनकी अमूल्य आध्यात्मिक सम्पत्ति थी। मैंने अनेक विषम परिस्थितियों में भी इनका यह विश्वास डगमगाता नहीं देखा। **धैर्य** और **शान्ति** इनके चरित्र एवं व्यक्तित्व को और अधिक परिष्कृत कर देते थे। किसी भी विरोधी के तर्कों और युक्तियों कोधैर्यपूर्वक सुनकर शान्तिपूर्वक प्रत्युत्तर देना इनके स्वभाव की दिव्यता थी, जो विरोधियों को भी इनके अनुकूल बना देती थी। यह अतिशयोक्ति नहीं, अपितु मेरे द्वारा प्रत्यक्षीकृत घटनायें हैं।

ब्र. राजसिंह जी की **व्यवहार कुशलता** के कारण सब इनकी ओर स्वत: आकृष्ट हो जाते थे और पराये भी अपने बन जाते थे। सभी यह अनुभव करते थे कि मुझे ही इनके द्वारा सबसे अधिक प्यार मिल रहा है। प्रतिष्ठित पद और व्यक्तित्व के धनी होते हुए भी विनम्रता इतनी थी कि अपनों से बड़ों के चरणस्पर्श कर आशीर्वाद लेते थे। मंचासीन विद्वानों को सुनने के लिए इन्हें श्रोता के रूप में नीचे बैठना ही अधिक पसन्द था और जहाँ तक सम्भव हो ऐसा आचरण करते भी थे। आपके चेहरे की मधुर मुस्कान सभी को अपनी ओर आकृष्ट कर लेती थी। किशोरों व युवकों को गले लगाकर प्रेमपूर्वक मिलना इनका स्वभाव था। इस व्यवहारकुशलता के कारण ये अनेकों परिवारों के पुत्र, अनेकों बहिनों के भाई, अनेकों युवकों के मित्र, अनेकों बच्चों के पिता एवं प्रेरणास्रोत बने। इनकी बहिन बनने का यह गौरवमय सौभाग्य मुझे भी प्राप्त हुआ और अति स्नेह पाया। मैंने इन्हें अति निकटता से परखा है। इन्होंने अपने ब्रह्मचर्यव्रत का पालन बखूबी निभाते हुए हर स्त्री को माता, बहिन और बेटी की पवित्र दृष्टि से देखा। अपने चरित्र की रक्षा के लिए विशेष रूप से सावधान रहते थे। उदास और रोते हुए को हँसाना तथा सदा मस्त रहना इनके चरित्र की विशेषता थी। कोई दूसरा इनके साथ कितना भी बुरा व्यवहार क्यों न करे, इसकी परवाह न करते हुए ये उसके साथ भी मित्रवत् व्यवहार करते रहे। इसी कारण इन्हें जीवन में अनेकों बार हानि उठानी पड़ी और अनेक बार धोखे भी सहन करने पड़े।

दिल के अत्यन्त ही **उदार** ब्र. आचार्य राजसिंह अनेक निर्धनों, दु:खियों और बेसहारों के सहारा थे । आवश्यकता पड़ने पर अनेक छात्र, गुरुकुलों के ब्रह्मचारी और विद्वान् आर्थिक सहायता के लिए आते रहते थे और ये सदा उनकी सहायता में तत्पर देखे गये। यदि अपने पास से सम्भव न हो, तो कहीं न कहीं से व्यवस्था करवा ही देते थे। कई विद्यार्थियों के लिए लैपटॉप तक की व्यवस्था करवा कर दी। अनेक योग्य विद्वानों, भजनोपदेशकों और उपदेशकों को आर्य समाज के मंच पर लाने का महान् श्रेय आपको प्राप्त है। मानवता और दया की मूर्ति यह महामानव किसी का भी दु:ख सहन नहीं कर सकता था। इन्होंने अपने निवास स्थान का नाम **वेद मन्दिर आश्रम** रखा हुआ था और सचमुच आश्रम की तरह ही लोग यहाँ नि:शुल्क आश्रय प्राप्त करते थे। आर्थिक समस्या होने के बावजूद भी आपने कभी अपने मन में संकीर्णता नहीं आने दी। 13 साल की अल्पायु में ही पिता द्वारा जौहरी के व्यवसाय में लगा दिये जाने पर बहुत इच्छा होने पर भी ये स्वयं तो मैट्रिक से आगे नहीं पढ़ पाये, परन्तु अनेकों विद्यार्थियों को पढ़ने की प्रेरणा, आश्रय व आर्थिक सहायता देकर इस कमी की पूर्ति करते रहे। अनेकों बार दुकान के गहने गिरवी रखने पड़े, पर सहायता करने से नहीं चूके। अभी भी आर्य जगत् में ऐसे अनेकों विद्वान् हैं, जिन्होंने इनके द्वारा छात्रवृत्तियाँ प्राप्त कीं। आपने जब तक व्यवसाय किया, आपकी पूर्ण ईमानदारी और चरित्र की लोगों पर धाक रही। जौहरी तो अपने सगे-सम्बन्धी के साथ भी बेईमानी के लिए बदनाम होता है, वहीं भैया राजसिंह अपनी ईमानदारी के लिए प्रसिद्ध थे। जिस भी क्षेत्र में आपने काम किया, वहीं अपने सिद्धान्तों और ईमानदारी पर कायम रहे और इसके लिए दूसरों को भी प्रेरित करते रहे।

प्रत्येक कार्य को स्वयं **उत्साहपूर्वक** करना और दूसरों को उत्साहित करना इनकी विशेषता थी। बहु आयामी व्यक्तित्व के धनी आचार्य राजसिंह आर्य ने एक विशाल वटवृक्ष के समान अनेक लोगों को आश्रय प्रदान किया, जिनके अभाव में वे अब स्वयं को अनाथ और बेसहारा अनुभव कर रहे हैं। आर्य समाज की इस महान् विभूति के असमय में चले जाने से जो रिक्तता आ गई है, उसकी पूर्ति होना असम्भव है। आप अपने पीछे अनेक महान् एवं महत्त्वपूर्ण सपनों को अधूरा छोड़ गये हैं। बेसहारा वृद्धों के लिए सभी प्रकार की आधुनिक सुविधाओं से सम्पन्न एक आश्रय प्रदान करना और उनकी **सेवा का आदर्श** प्रस्तुत करना आपका व्यक्तिगत मुख्य सपना

- शेष पृष्ठ 6 पर

पृष्ठ 2 का शेष

करता हूं।

योगेश मुंजाल (हीरो परिवार) ने कहा कि ब्रह्मचारी जी हम सबके साथ मिलकर कार्य कर रहे थे लेकिन अब हमें अधिक जिम्मेदारी से कार्य करना होगा।

श्री सुरेन्द्र रैली, व. उप प्रधान, केन्द्रीय सभा ने ब्रह्मचारी जी के पुराने भजन को दोहराया और कहा कि उनके अधूरे कार्य को पूरा करने का निर्णय लें यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

महाशय धर्मपाल जी ने अपनी श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि ब्र. राजसिंह जी की हमें अभी बहुत आवश्यकता थी, उनकी कमी हमें खटकती रहेगी। उनके कई कार्य अधूरे हैं वे हम सबको मिलकर पूरे करने हैं। राज सिंह तू गया नहीं आज भी इन आर्य समाजों में जिन्दा है।

दिल्ली सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य ने अपने भाव व्यक्त करते हुए कहा कि आर्य जगत में कोई उनका प्रथम मित्र है तो वह मैं हूँ। मैंने उनके फर्श से अर्श तक के जीवन का दिग्दर्शन किया है। उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन वैदिक धर्म के प्रचार व प्रसार में लगाया है मैं उनकी भावनाओं की कद्र करता हूँ उन्हें शत-शत नमन करताहूँ।

स्वामी आर्य वेश जी ने कहा कि ब्र. राजसिंह जी पाखंड के विरुद्ध एक आवाज छोड़कर गए है। आज हम संकल्प लें कि उनके अधूरे कार्य तथा वेद के सन्देश को इलैक्ट्रोनिक मिडिया एवं अंग्रेजी भाषा के माध्यम से पूरे विश्व में प्रसारित करें यही राजसिंह जी के प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

अन्त में श्री विनय आर्य जी ने अपने भजन के माध्यम से श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए अपनी व्यथा प्रकट की-

"आकाश बता क्या बात हुई,
क्यों धैर्य तुम्हारा टूट गया।
सीने में गगन के छेद हुआ,
इक और सितारा टूट गया।...."

इस भजन को सुनते ही उपस्थित आर्यजन अपनी आखों में छलकती अश्रुधारा को रोक नहीं सके।

इस अवसर पर श्रद्धांजलि देने के लिए पधारे समस्त आर्यजनों को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से ब्र. राजसिंह आर्य जी की स्मृति में प्रकाशित एक फोल्डर "दैनिक अग्निहोत्रम" एवं लघु पुस्तिका 'ओ३म् संकीर्तन एवं प्रभु चिन्तन' वितरित की गई।

श्रद्धांजलि सभा को सम्बोधित करते हुए महाशय धर्मपाल जी। ब्र. राजसिंह आर्य जी की स्मृति में पृक्षारोपण करते संन्यासी गण। ब्र. राजसिंह आर्य जी के पार्थिव शरीर की भस्म को गुरुकुल कांगड़ी के खेतों मे दबाकर वृक्षारोपण करते सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी एवं पारिवारिक जन।

सम्पादकीय

विद्वत्ता एवं कार्यकर्त्ता का अद्भुत संगम ब्र. राजसिंह आर्य

विश्व विख्यात वैदिक प्रवक्ता ब्र. राजसिंहआर्य एक ऐसे महान व्यक्तित्व थे जिनमें समाज सेवा करने का जज्बा और विद्वत्ता का एक अद्भुत योग था। इस आर्य जगत का कौन ऐसा व्यक्ति होगा ? जो उनके नाम से परिचित न हो। विद्वत्ता पूर्ण अपनी ओजस्वी वाणी से हजारों लोगों के हृदय को गद्-गद् करने वाली अद्भुत शक्ति मानो जगदम्बा प्रभु ने उन्हें पुरस्कार में दी हो आर्य समाज की सेवा एवं राष्ट्रहित के कार्यों को उत्साह पूर्वक करने का सामर्थ्य अंतर्यामी ईश्वर ने उनमें कूट -कूट कर भरा हो। यही कारण रहा होगा कि अपने जीवन के छोटे से कार्यकाल में वेदों का डंका आलम में बजा कर दिखा दिया, भारत में ही नही मॉरिशस, युगांडा, सिंगापुर, बैंकाक, ऑस्ट्रेलिया, सूरीनाम, शिकागो एवं हॉलैंड आदि देशों में आर्य समाज के संगठन को मजबूत ही नही किया बल्कि नए आर्य समाजों की स्थापना भी कराई।

जीवन के प्रारंभिक काल से ही गोरक्षा, आर्यवीर दल एवं समाज सुधार के अनेक कार्यो से जुड़े हुए होकर आर्य समाज में अपनी भूमिका को स्थायित्व प्रदान किया।

अपने अनेक वृहद यज्ञों, अनुष्ठानों एवं वेद उपनिषद कथाओं की। अपनी सरस वाणी में वेद ज्ञान रूपी रहस्य को जन सामान्य के लिए सुग्राह्य बनाया। यह आपकी विद्वत्ता का ही प्रमाण है।

सार्वदेशिक आर्य वीर दल के महामन्त्री पद को सुशोभित करआपने आर्यवीर दल को नए आयाम दिए। अन्तर्राष्ट्रीय आर्यवीर महासम्मेलन का आयोजन कराया जिसमें पूरे विश्व में आर्य वीरों की विशेषता एवं आवश्यकता का दिग्दर्शन कराया। और पूरे भारत में आर्यवीर दल की शाखाओं का शुभारम्भ कराया गया।

आपने केवल आर्य समाज की ही पृष्ठभूमि से जुड़कर कार्य नही किया अपितु महर्षि दयानन्द सरस्वती की मान्यताओं और आदर्शों को आर्य समाज की परिधि से बाहर भी फैलाने का सफल प्रयास किया। जिसमे राम जन्मभूमि मन्दिर आन्दोलन में ७० युवकों को अपने नेतृत्व में गिरफ्तारी देकर माछरा जेल में चार दिन रहे तथा विशाल यज्ञ का आयोजन कर श्रीराम चन्द्र जी के आदर्शों की प्रेरणा देकर भव्य राम मन्दिर बनाने का संकल्प दिलाया।

ब्र. राजसिंह आर्य जी ने पौराणिक पूजा पद्धति के विरोध में कई पौराणिक आचार्यो से शास्त्रार्थ किया और उनके साथ वृहद यज्ञों का आयोजन कर उन्हें ऋषिप्रणीत वैदिक विचारधारा एवं पंचमहायज्ञ पूजा पद्धति से अवगत कराया और मैं समझाता हूँ कि ये आर्य समाज के महारत्न आधुनिक भारत के अंतिम शास्त्रार्थ महारथी कहे जाएं तो अतिश्योक्ति न होगी।

मुझे महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की वह घटना स्मरण आती है। जब हरिद्वार के कुम्भ मेले में पाखण्ड खंडनी पताका गाड दी, जब महर्षि ने देखा की सबने प्रवचन सुना तो ध्यान से लेकिन कोई प्रतिक्रिया उन्हें नजर नही आई, तो उन्होंने चिन्तन किया कि स्वयं में कोई त्रुटि है और पुन: हिमालय की कंदराओं में पहुँचे और सर्वस्व त्यागकर केवल कोपीन धारण किया और फिर से वेद प्रचार में लगे और उसकी प्रतिक्रिया उनके सामने आने लगी। ठीक उसी प्रकार ब्र. राजसिंह जी ने भी स्वयं में कुछ कमियां महसूस की और उनकों दूर करने के लिए गाजीपुर में कुटिया बनाकर केवल छाछ पर जीवनयापन कर कठोर तप किया। फिर गंगोत्री में जाकर अदर्शन मौन रखकर गायत्री की जिससे उन्हें आत्म संयम और अन्तर्ज्ञान की प्राप्ति हुई। जिसके बल पर उन्होंने बड़े-बड़े सम्मेलनों को करने का साहस किया और कुशलता पूर्वक आरोप-प्रत्यारोप के बीच सरलता से पूर्ण किया।

भारतवर्ष की आधुनिक चकाचौंध वाली नगरी कही जाने वाली मुम्बई नगरी फिल्म नगरी के नाम से भी जानी जाती है। ब्र, राजसिंह जी ने भी वैदिक धर्म संस्कृति का प्रचार करने हेतु फिल्म व्यवसाय को अपनाया, परन्तु उसकों छोड़ पुन: दिल्ली में आकर आर्य समाज के ध रातल से जुड़कर समाज उत्थान के कार्यों में संलग्न हो गए। सार्वदेशिक आर्यवीर दल के महामन्त्री ही नही दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के 12 वर्षों तक प्रधान पद पर आर्य समाज का चहुँदिश यश बढ़ाते हुए वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में सदा संग्लन रहे। 12 वर्षों तक ही दिल्ली आर्य विद्या परिषद् के भी प्रधान पद को सुशोभित ही नही किया बल्कि आर्य विद्यालयों में नैतिक शिक्षा के माध्यम से भारतीय उच्च आदर्शों की शिक्षा का प्रणयन भी किया।

सम्पूर्ण विश्व में महर्षि के आदर्शों का शंखनाद हुआ और एक के बाद एक अंतर्राष्ट्रीय महासम्मेलनों की श्रृंखलाबद्ध प्रस्तुति होने लगी। और वेद संस्कृति का प्रचार-प्रशर भारत की सीमाओं के बाहर भी बढने लगा। भारत वर्ष में अनेक गुरुकुलों को भी ब्रह्चारी जी का संरक्षण प्राप्त था। वानप्रस्थ के माध्यम से बेसहारा लोगों की सेवा का उत्तरदायित्व भी उन्होंने सम्भाला। उन प्रकल्पों के जन्म दाता ब्र. राजसिंह आर्य सभाओं एवं सत्संगों में विद्वानों में शीर्षस्थ ओजस्वी वाणी के प्रखर वक्ता, जब बोलते थे तो लोग अनायास ही आकर्षित होने लगते थे। समाज सुधार के किसी भी कार्य के लिए वे सरलता से सहभागी बन जाते थे। ये दोनों शाक्तियां बहुत कम स्थानों पर ही प्राप्त होती है। लेकिन यह महा संगम ब्र. राजसिंहआर्य को सहजता से प्राप्त था।

आज हम यह संकल्प लेते है की उनके अधूरे प्रकल्पों को पूर्ण करने में पूर्ण पुरुषार्थ करेंगे क्योंकि उन्होंने अपने जीवन से इस समाज को यही सन्देश दिया।

युवा वैदिक विद्वान् एवं कर्मठ आर्य नेता का महाप्रयाण

५जनवरी,२०१५, अपराह्न३:३० बजे के लगभग फोन की घंटी बजी। पुणे से डॉ चंद्रकांत वि. गर्जे का फोन था। वे मुझसे कुछ जानकारी चाहते थे। साथ ही, उन्होंने बताया कि अभी-अभी उनकी श्री विनय आर्य से बात हुई है, ब्रह्मचारी जी नहीं रहे। उनकी बात पर सहसा विश्वास नहीं हुआ। मैंने उनसे कहा कि ब्रह्मचारी राजसिंह जी बहुत स्वस्थ और बहुत युवा हैं-ऐसा कैसे हो सकता है? फिर भी, दिनभर व्यग्रता बनी रही। शाम को ई-मेल खोल कर देखा तो श्री विनय आर्य की सूचना से गर्जे जी की जानकारी की पुष्टि हुई। हार्दिक कष्ट हुआ। अगले दिन प्रात: समाचार-पत्रों में अन्त्येष्टि के विषय में विज्ञापन था। अब तो शक की कोई गुंजाइश ही न थी। ब्र. राजसिंह जी की विद्वत्ता, विनम्रता, कर्मठता, महानता, साधना, आर्यत्व आदि आँखों के सामने घूम गये।१६ सितंबर, १९५३ को हरियाणा, जिला झज्जर के आसौदा ग्राम में जन्मे राजसिंह को आर्य-समाज के संस्कार अपनी ननिहाल से मिले, जो लाला दीपचन्द आर्य एवं स्वामी सत्यपति जी के संपर्क से पुष्पित-पल्लवित हुए। उन्होंने ब्रह्मचर्यव्रत का जो संकल्प लिया, उसका आजन्म पालन किया। आर्य वीर दल और उसके शिविरों के माध्यम से उन्होंने बहुत-से युवकों को आर्य समाज से जोड़कर उन्हें संस्कारित किया। कुछ समय के लिए वे मायानगरी मुंबई भी गये और 'अनोखा इंसान' शीर्षक फिल्म का निर्माण भी किया, किन्तु मायानगरी उन्हें बहुत समय तक अपने मायाजाल में बाँधे न रख सकी। मुंबई से लौटने के बाद वे पूरी सक्रियता और निष्ठा के साथ आर्यसमाज की गति-विधियों से जुड़ गये।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् एवं अन्य अनेक सामाजिक-सांस्कृतिक संस्थाओं के संस्थापक राजसिंह ने अनेक माध्यमों से सामाजिक कुरीतियों, पाखंडो, आडंबरों आदि का प्राण-पण से विरोध किया तथा आर्यसमाज की प्रत्येक गतिविधि में बढ़-चढ़कर भाग लिया। उन्होंने अनेक कार्यक्रमों, आन्दोलनों का निर्भीकतापूर्वक नेतृत्व किया। एक-दो बार जेल भी गये। सार्वदेशिक आर्य वीर दल के महामंत्री के रूप में तथा १२ वर्षो तक दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पद पर रहते हुए उन्होंने आर्य समाज की उल्लेखनीय सेवा की है। वे अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलनो को एक नयी गति दे गये, जिसके लिए उन्हें हमेशा याद किया जाएगा।

अनेक आर्य संस्थाओं के महत्वपूर्ण पदों पर अनथक कार्य करने वाले ब्र. राजसिंह प्रेरक व्यक्तित्व के धनी थे। वे उच्चकोटि के वैदिक विद्वान, उत्कृष्ट प्रवचनकर्ता, अच्छे भजनीक, निष्ठावान आर्य प्रचारक, कुशल संगठनकर्ता, महान समाजसेवी एवं समाज-सुधारक, कल्पना और संकल्प में समन्वय करने वाले दूरद्रष्टा मनीषी थे। उनके असामयिक निधन से नि:संदेह आर्य-जगत् की अपूर्णीय क्षति हुई है। उनके प्रति मैं अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

- डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया

विश्वभर की आर्यसमाजों से ब्र. राजसिंह आर्य जी के निधन पर प्राप्त शोक सन्देश

1. सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
2. दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
3. आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली
4. आर्य समाज हनुमान रोड
5. स्त्री आर्य समाज हनुमान रोड
6. आर्ष महाविद्यालय गुरुकुल कालवा
7. आर्य समाज केशवपुरम
8. आर्य समाज दीवान हाल
9. आर्य समाज दिलशाद गार्डन
10. आर्य प्रतिनिधि सभा वाराणसी
11. कुलपति गुरुकुल कांगड़ी वि.वि.
12. गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय विभाग
13. आर्य समाज गुरुकुल कांगडी
14. द. आदर्श विद्यालय तिलक नगर
15. विश्वभारती शिक्षा संस्थान गुरुकुल भैयापुर लाढोत रोहतक
16. आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा
17. ह्यूमन बिहेविअर रिसर्च इंस्टिट्यूट गुडगाँव
18. गोरक्षा दल हरियाणा
19. आर्य समाज कीर्ति नगर
20. म. द.जन कल्याण ट्रस्ट कीर्ति नगर
21. अध्यात्म पथ पश्चिम विहार
22. महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर
23. गोशाला संघ हरियाणा सोसाइटी
24. आर्य समाज त्रिनगर दिल्ली
25. आर्य समाज आर्य पुरा सब्जी मंडी
26. आर्य समाज सरोजनी नगर
27. आर्य उप प्र. सभा भदोई उ.प्र.
28. आर्ष गुरुकुल आर्य नगर पहाड़गंज
29. आर्य समाज आर्य नगर पहाड़गंज
30. अ. भा.श्रद्धानन्द दलितोद्धार सभा
31. आर्य वै.कन्या पाठशाला आर्य नगर
32. आर्य वै.बाल पाठशाला आर्य नगर
33. आर्य वीर दल फरीदाबाद
34. आर्य समाज रोहिणी सै.-7
35. आर्य समाज पूर्वी पंजाबी बाग
36. विश्वभारती अनु.परिषद् उत्तर प्रदेश
37. आर्य समाज औचन्दी दिल्ली
38. आर्य समाज शाहबाद मोहम्मदपुर
39. आर्य समाज मंगोलपुरी
40. आर्य समाज झज्जर हरियाणा
41. आर्य समाज वेद मंदिर पीतमपुरा
42. वै. सा.प्रति. श्रद्धानन्द बाजार दिल्ली
43. आर्य वीर दल अलीगढ़
44. जे.बी.एम. ग्रुप
45. आर्य समाज सैनिक विहार दिल्ली
46. मातृ मंदिर कन्या गुरुकुल वाराणसी
47. आर्य समाज लक्ष्मी नगर दिल्ली
48. आर्य समाज मस्जिदमोठ नई दिल्ली
49. दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मंडल
50. आर्ष गुरुकुल आर्य स.किंग्सवे कैंप
51. पतं. योग समिति भारत स्वा. ट्रस्ट
52. आर्य प्रकाशन कुण्डे वालान दिल्ली
53. वेद विचार रतन विहार दिल्ली
54. आर्य समाज रतन विहार दिल्ली
55. आर्य समाज मिन्टो रोड नई दिल्ली
56. गुरुकुल आर्य समाज मिन्टो रोड
57. आर्य समाज अशोक विहार फेज-2
58. गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ फरीदाबाद
59. आर्य समाज रोहतास नगर शाहदरा
60. आर्य समाज शादी खामपुर
61. टंकारा समाचार
62. आर्य समाज गोविन्दपुरी
63. आर्य केंद्रीय सभा फरीदाबाद
64. आर्य समाज पश्चिम विहार
65. मे. अश्वनी कुमार स्मारक समिति
66. गुरुकुल अलियाबाद हैदराबाद
67. आर्य वीरांगना दल दिल्ली प्रदेश
68. एस.एम.आर्य प.स्कूल नई दिल्ली
69. आर्य समाज पंजाबी बाग दिल्ली
70. आर्य समाज अनारकली दिल्ली
71. डी.ए.वी कॉलेज मैनेजिंग कमेटी
72. आर्ष कन्या गुरुकुल दधिया (राज)
73. आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा
74. आर्य समाज सागरपुर दिल्ली
75. आर्य गुरुकुल तिहाड़ ग्राम
76. आर्य वीर दल प. उत्तर प्रदेश
77. महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल
78. आर्य समाज कर्मपुरा दिल्ली
79. आर्य स.म. द. पार्क त्रिनगर दिल्ली
80. आर्य समाज सेक्टर-7 फरीदाबाद
81. आर्य समाज अशोक विहार-1
82. आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश
83. गुरुकुल महाविद्यालय पूर्वी हापुड़
84. आर्य समाज खजुरी खास दिल्ली
85. आर्य स. संजय कॉलोनी फरीदाबाद
86. आर्य स. एन.एच.-3 फरीदाबाद
87. आर्य स. एन.एच.-4 फरीदाबाद
88. आर्य समाज सेक्टर-15 फरीदाबाद
89. द. जन कल्याण आश्रम मधुबनी
90. आर्य वीर दल सोनीपत
91. आर्य स.राजपुरा टाउनशिप पंजाब
92. आर्य समाज बड़ा बाजार सोनीपत
93. वेद प्रचार मण्डल जिला सोनीपत
94. आर्य केंद्रीय सभा सोनीपत
95. वैदिक पथ समिति सोनीपत
96. महर्षि द. स. स्मारक ट्रस्ट टंकारा
97. भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा
98. सार्वदेशिक आर्य वीर दल घरोण्डा
99. आर्य समाज कस्तूरबा नगर दिल्ली
100. आर्य समाज डिफैन्स कॉलोनी
101. आर्य समाज विवेक विहार दिल्ली
102. आर्य समाज प्रीत विहार दिल्ली
103. आर्य स.मानसरोवर पार्क दिल्ली
104. के.एल. मेहता स्कूल फरीदाबाद

पृष्ठ 3 का शेष

था। इसके लिए स्थान की व्यवस्था भी कर ली गई थी, परन्तु सरकारी औपचारिकताओं में ही अत्यधिक समय लग जाने के कारण वह अधूरा ही रह गया। परम दयालु प्रभु से हम याचना करते हैं कि इस असह्य दु:ख को सहन करते हुए हम उनके आदर्शों को जीवन में धारणकर सकें और तन, मन व धन से इनके अधूरे सपनों को पूर्ण कर सकें। यही उनके प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी। यह महान् आत्मा अपने भावी जन्म में इससे अधिक सामर्थ्यवान् होकर उच्चतर महानता को प्राप्त करे।

एक दीप बुझ गया स्वयं ही,
अन्य लाखों दीप जलाकर॥

105. आर्य समाज नांगलराया दिल्ली
106. आर्य समाज नेहरु ग्राउंड फरीदाबाद
107. आर्य स. न्यू मुल्तान नगर दिल्ली
108. शिवाजी नगर गुडगाँव
109. परोपकारिणीसभा अजमेर
110. आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा
111. आत्म शुद्धि आश्रम बहादुरगढ़
112. भा. आर्य भजनोपदेशक परिषद्
113. आर्य समाज दादर नगर मेरठ
114. आर्य समाज रानी बाग दिल्ली
115. जय अपार्टमेंट अलीपुर बिरोदाई
116. आर्य समाज नांगलोई विस्तार
117. गुरुकुल कुरुक्षेत्र हरियाणा
118. आर्य स. विशाखा इंक्लेव दिल्ली
119. आर्य समाज वसुन्धरा गाजियाबाद
120. अमर ऐरी आर्य समाज कनाडा
121. म. दयानन्द गोसंवर्धन केंद्र गाजीपुर
122. आर्य समाज अर्जुन नगर गुडगाँव
123. आर्य समाज न्यू पालम विहार
124. आर्य केन्द्रीय सभा गुडगाँव
125. सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल
126. आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश
127. आर्य वेद प्रचार मंडल मेवात
128. आर्य समाज नया बांस दिल्ली
129. आर्य समाज राय नगर गुडगाँव
130. आर्य समाज अर्बन एस्टेट गुडगाँव
131. आर्य समाज सेक्टर-15 गुडगाँव
132. आर्य समाज शिवाजी नगर गुडगाँव
133. आर्य समाज किंग्जवे कैंप दिल्ली
134. आर्य वीर दल गुडगाँव मण्डल
135. आर्य स. किदवई नगर पूर्वी दिल्ली
136. आर्य समाज नरेला दिल्ली
137. आर्य समाज कालकाजी दिल्ली
138. आर्य समाज महावीर नगर दिल्ली
139. राष्ट्रिय आर्य निर्मात्री सभा दिल्ली
140. आर्य समाज बजार सीताराम दिल्ली
141. आकाश गोयल, चेयरमैन, न्यूज-7
142. आर्य समाज ग्रेटर कैलाश-1
143. आर्य वीर दल गुडगाँव
144. आर्य गुरुकुल रानी बाग
145. शान्ति देवी आर्य कन्या गुरुकुल सैनिक विहार दिल्ली
146. आर्य समाज मेन बाजार रानी बाग
147. अ. भा. दयानन्द सेवाश्रम संघ
148. आर्य समाज दयानन्द विहार
149. आर्य समाज जहाँगीरपूरी
150. आर्य समाज मयूर विहार फेज-2
151. आ. स. महारानी एन्क्लेव हस्तसाल
152. संस्कृत शिक्षक संघ उत्तम नगर
153. आर्य समाज सरिता विहार
154. मांगे राम गर्ग भारतीय जनता पार्टी
155. ओम् योग संस्थान फरीदाबाद
156. भा. संस्कृत शिक्षा समिति हरिद्वार
157. वै.साधन आश्रम तपोवन हरिद्वार
158. वैदिक भक्ति साधन आश्रम रोहतक
159. नगर आर्यसमाज शाहदरा दिल्ली
160. आर्य समाज सूर्य निकेतन
161. आर्य प्रतिनिधि सभा झारखण्ड
162. आर्य पुरोहित सभा दिल्ली प्रदेश
163. आर्य समाज पुष्पांजलि एन्क्लेव
164. परोपकारिणी सभा अजमेर
165. आर्य प्रतिनिधि सभा ज. कश्मीर
166. आर्य समाज बक्शी नगर जम्मू
167. आर्य स. कैराना शामली उत्तर प्रदेश
168. आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब
169. कन्या गुरुकुल देहरादून
170. सन्तोष आर्या, आर्यसमाज जालना
171. राजभाषा संघर्ष समिति
172. सत्य सनातन वेद मंदिर समिति
173. आर्यसमाज आसनसोल (प. बं.)
174. आर्ष गुरुकुल नोएडा
175. आर्य समाज नोएडा
176. आर्य समाज शाहदरा
177. श्री बंगा जी, सिंगापुर
178. आर्य समाज आदर्श नगर
179. आर्यसमाज सी-3 जनकपुरी
180. आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड
181. आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल
182. पीयूष आर्य, चेन्नई
183. आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार
184. आर्य प्रतिनिधि सभा गुजरात
185. आ.समाज हौजखास, दिल्ली
186. आर्यसमाज आरा, (बिहार)
187. आर्यसमाज गोरखपुर (उ.प्र.)
188. महिला आर्यसमाज गोरखपुर
189. आर्य समाज नेपाल
190. रमेश गुप्ता, अमेरिका आ. प्र.सभा
191. भुवनेश खोसला, अमेरिका
192. आर्य प्रतिनिधि सभा, कनार्टक

इसके अतिरिक्त हजारों सन्देश ईमेल के माध्यम से प्राप्त हुए हैं, जिन्हें यहां दे पाना सम्भव नहीं है। - सम्पादक

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता बनाम पेरिस का हमला

प्रथम पृष्ठ का शेष

इस पर मुसलमानों ने अत्यंत अश्लील पुस्तक 'तेगे फकीर बर गर्दने शरीर' (दुष्ट व्यक्तियों की गर्दन पर फकीर की तलवार) और हदिया उल असलाम नामक पुस्तक छापी। इसके जवाब में मुंशी जी ने हमलये हिन्द(1863), समसामे हिन्द और सौलते हिन्द (1868) नामक तीन पुस्तकें मेरठ से छपवायीं।

इसके फलस्वरुप मुसलमानों में तीव्र प्रतिक्रिया हुई और एक मुस्लिम पत्र जामे जमशीद ने 16 मई 1881 के अंक में मुंशी जी के विरुद्ध मुसलमानों को उतेजित किया जिसके कारण सरकार ने मुंशी जी के खिलाफ वारंट निकाल दिया एवं कचहरी में मुकदमा चलाया गया। यद्यपि मुंशी जी द्वारा वकीलों द्वारा पूछे गए सभी प्रश्नों का सप्रमाण उत्तर दिया गया मगर फिर भी निचली अदालत ने 500 रुपये जुर्माना किया एवं उनकी पुस्तकों को फड़वा दिया। मुंशी जी ने ऊपरी अदालत में अपील की। तत्कालीन आर्य समाचार मेरठ, आर्यदर्पण शाहजहाँपुर आदि में लेख लिखे। भारत सरकार, गवर्नर जनरल शिमला आदि को आवेदनपत्र भेजे। गवर्नर ने मुकदमे की कार्यवाही शिमला मंगवाई मगर मामला विचाराधीन है कहकर जुर्माने की रकम को घटाकर 100 रुपये कर दिया गया और मुसलमानों द्वारा हिन्दुओं के विरुद्ध लिखी गई पुस्तकों को नजरअंदाज कर दिया गया। मामला हाई कोर्ट में गया मगर जुर्माना बहाल रखा गया। अंत में तीव्र आंदोलन होने पर मुंशी जी का जुर्माना भी क्षमा कर दिया गया। स्वामी दयानंद ने आर्यसमाज के पत्रों के माध्यम से मुंशी जी की धन से सहायता करने की अपील भी निकाली थी। मुंशी जी ने मेला चाँदपुर शास्त्रार्थ में स्वामी जी के साथ आर्यसमाज के पक्ष को प्रस्तुत किया था और आर्यसमाज मुरादाबाद के प्रधान पद पर भी रहे थे। स्वामी दयानंद पर इस मुकदमे के कारण अंग्रेज सरकार की न्यायप्रियता एवं पक्षपात रहित सोच पर अनेक संशय उत्पन्न हो गए। सही पक्ष होते हुए भी मुंशी जी को तंग किया गया, उनकी पुस्तकें नष्ट की गई एवं मुसलमानों की पुस्तकों पर कोई कार्यवाही नहीं की गई। स्वामी जी शांत बैठने वालो में से नहीं थे। अपने लंदन में पढ़ रहे अपने शिष्य पंडित श्याम जी कृष्ण जी को लंदन की पार्लियामेंट में इस मामले को उठाने की सलाह अपने पत्र व्यवहार में दी जिससे की अंग्रेज सरकार द्वारा भारत में सामान्य जनता के विरुद्ध कैसा व्यवहार होता है इससे लंदन निवासी परिचित हो सके। अंग्रेजों द्वारा पक्षपात करने के कारण स्वामी दयानंद का चिंतन निश्चित रूप से स्वदेशी राजा एवं स्वतंत्रता की ओर पहले से अधिक प्रेरित होना कोई अतिश्योक्ति नहीं है।

अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के पक्षधर स्वामी दयानंद ने सत्यार्थ प्रकाश की रचना कर चिर काल से सो रही मानव जाति को जगाया। सत्यार्थ प्रकाश आरम्भ के दस समुल्लासों की बजाय अंत के चार समुल्लासों के कारण अधिक चर्चा में रहा है। सत्यार्थ प्रकाश के विपक्ष में इतना अधिक साहित्य लिखा गया कि एक वृहद पुस्तकालय ही बन जाये। इसका मूल कारण स्वामी जी के उद्देश्य को ठीक प्रकार से समझना नहीं था। स्वामी जी का उद्देश्य किसी की भावना को आहत करना नहीं अपितु सत्य का मंडन एवं असत्य का खंडन था और मनुष्य के जीवन का उद्देश्य भी यही है। स्वामी जी का कहना था कि मत-मतान्तर के आपसी मतभेद के चलते धर्म का ह्रास हुआ है एवं मानव जाति की व्यापक हानि हुई है और जब तक यह मतभेद नहीं छूटेगा तब तक आनंद नहीं होगा। पंडित गंगाप्रसाद उपाध्याय जी के अनुसार सत्यार्थ प्रकाश के माध्यम से स्वामी दयानंद ने रूढ़िवादी एवं असत्य मान्यताओं पर जो कुठाराघात किया वह सैद्धांतिक, पक्षपात रहित एवं तर्कसंगत था जबकि उससे पहले लिखी गई पुस्तकों में प्राय: भद्दी गलियां एवं अश्लील भाषा की भरमार अधिक होती थी। स्वामी जी सामाजिक चेतना के पक्षधर थे।

स्वामी दयानंद के पश्चात पंडित लेखराम द्वारा अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के अंतर्गत आर्यमर्यादा का पालन करते हुए वैदिक धर्म के विरुद्ध प्रकाशित हो रही पुस्तकों का प्रतिउत्तर दिया। पंडित जी द्वारा रचित रिसाला जिहाद के विरुद्ध मुसलमानों ने 1892 में कोर्ट में केस किया था जिसकी पैरवी लाला लाजपत राय जी द्वारा बखूबी की गई थी। अनंतत: जीत आर्यसमाज की हुई थी। अहमदिया जमात के मिर्जा गुलाम अहमद ने बरहीन अहमदिया नामक पुस्तक चंदा मांग कर छपवाई। पंडित जी ने उसका उत्तर तकजीब ए बरहीन अहमदिया लिखकर दिया। मिर्जा ने सुरमाये चश्मे आर्या (आर्यों की आंख का सुरमा) लिखा जिसका पंडित जी ने उत्तर नुस्खाये खब्ते अहमदिया (अहमदी खब्त का ईलाज) लिख कर दिया। अंत में धोखे से पंडित जी को पेट में छुरा मारकर कत्ल कर दिया गया। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के लिए पंडित लेखराम जी का अमर बलिदान हुआ।

सन १९२३ में मुसलमानों की ओर से दो पुस्तकें '१९ वीं सदी का महर्षि' और 'कृष्ण, तेरी गीता जलानी पड़ेगी' प्रकाशित हुई थी। पहली पुस्तक में आर्यसमाज के संस्थापक स्वामी दयानंद का सत्यार्थ प्रकाश के १४ सम्मुलास में कुरान की समीक्षा से खीज कर उनके विरुद्ध आपतिजनक एवं घिनोना चित्रण प्रकाशित किया था जबकि दूसरी पुस्तक में श्री कृष्ण जी महाराज के पवित्र चरित्र पर कीचड़ उछाला गया था। उस दौर में विधर्मियों की ऐसी शरारतें चलती ही रहती थी पर धर्म प्रेमी सज्जन उनका प्रतिकार उन्ही के तरीके से करते थे। महाशय राजपाल ने स्वामी दयानंद और श्री कृष्ण जी महाराज के अपमान का प्रति उत्तर १९२४ में 'रंगीला रसूल' के नाम से पुस्तक छापकर दिया, जिसमे मुहम्मद साहिब की जीवनी व्यंग्यात्मक शैली में प्रस्तुत की गयी थी। यह पुस्तक उर्दू में थी और इसमें सभी घटनाएँ इतिहास सम्मत और प्रमाणिक थी। पुस्तक में लेखक के नाम के स्थान पर 'दूध का दूध और पानी का पानी' छपा था। वास्तव में इस पुस्तक के लेखक पंडित चमूपति जी थे जो की आर्यसमाज के श्रेष्ठ विद्वान् थे। वे महाशय राजपाल के अभिन्न मित्र थे। मुसलमानों के ओर से संभावित प्रतिक्रिया के कारण चमूपति जी इस पुस्तक में अपना नाम नहीं देना चाहते थे। इसलिए उन्होंने महाशय राजपाल से वचन ले लिया की चाहे कुछ भी हो जाये, कितनी भी विकट स्थिति क्यूँ न आ जाये वे किसी को भी पुस्तक के लेखक का नाम नहीं बतायेगे। महाशय राजपाल ने अपने वचन की रक्षा अपने प्राणों की बलि देकर की पर पंडित चमूपति सरीखे विद्वान् पर आंच तक न आने दी। १९२४ में छपी रंगीला रसूल बिकती रही पर किसी ने उसके विरुद्ध शोर न मचाया फिर महात्मा गाँधी ने अपनी मुस्लिमपरस्त निति में इस पुस्तक के विरुद्ध एक लेख लिखा। इस पर कट्टरवादी मुसलमानों ने महाशय राजपाल के विरुद्ध आन्दोलन छेड़ दिया। सरकार ने उनके विरुद्ध १५३ए धारा के अधीन अभियोग चला दिया। अभियोग चार वर्ष तक चला। राजपाल जी को छोटे न्यायालय ने डेढ़ वर्ष का कारावास तथा १००० रूपये का दंड सुनाया गया। इस फैसले के विरुद्ध अपील करने पर सजा एक वर्ष तक कम कर दी गई। इसके बाद मामला हाई कोर्ट में गया। कँवर दिलीप सिंह की अदालत ने महाशय राजपाल को दोषमुक्त करार दे दिया। मुसलमान इस निर्णय से भड़क उठे। खुदाबख्स नामक एक पहलवान मुसलमान ने महाशय जी पर हमला कर दिया जब वे अपनी दुकान पर बैठे थे पर संयोग से आर्य संन्यासी स्वतंत्रानंद जी महाराज एवं स्वामी वेदानन्द जी महाराज वहां उपस्थित थे। उन्होंने घातक को ऐसा कसकर दबोचा की वह छुट न सका। उसे पकड़ कर पुलिस के हवाले कर दिया गया, उसे सात साल की सजा हुई। रविवार ८ अक्टूबर १९२७ को स्वामी सत्यानन्द जी महाराज को महाशय राजपाल समझ कर अब्दुल अजीज नमक एक मतान्ध मुसलमान ने एक हाथ में चाकू, एक हाथ में उस्तरा लेकर हमला कर दिया। स्वामी जी को घायल कर वह भागना ही चाह रहा था की पड़ोस के दूकानदार महाशय नानकचंद जी कपूर ने उसे पकड़ने का प्रयास किया। इस प्रयास में वे भी घायल हो गए तो उनके छोटे भाई लाला चूनीलाल जी उसकी ओर लपके। उन्हें भी घायल करते हुए हत्यारा भाग निकला पर उसे चौक अनारकली पर पकड़ लिया गया। उसे चौदह वर्ष की सजा हुई ओर तदन्तर तीन वर्ष के लिए शांति की गारंटी का दंड सुनाया गया। स्वामी सत्यानन्द जी के घाव ठीक होने में करीब डेढ़ महीना लगा। ६ अप्रैल १९२९ को महाशय राजपाल अपनी दुकान पर आराम कर रहे थे। तभी इल्मदीन नामक एक मतान्ध मुसलमान ने महाशय जी की छाती में छुरा घोप दिया जिससे महाशय जी का तत्काल प्राणांत हो गया। हत्यारा अपने जान बचाने के लिए भागा ओर महाशय सीताराम जी के लकड़ी के टाल में घुस गया। महाशय जी के सपूत विद्यारतन जी ने उसे कस कर पकड़ लिया। पुलिस हत्यारे को पकड़ कर ले गई। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता में यह निराला बलिदान था।

लाहौर में आर्यसमाज के पुस्तक विक्रेता वीर परमानन्द जी को जेठ की दोपहरी में उस समय मार दिया गया जब वह उर्दू सत्यार्थ प्रकाश की प्रतियाँ को लेने अपनी दुकान पर गए थे। मुसलमानों के लिए सत्यार्थ प्रकाश के १४ वे समुल्लास की समीक्षा के उद्देश्य को मजहबी आक्रोश में हिंसा का रास्ता अपनाना दुर्भाग्यपूर्ण फैसला था।

अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की रक्षा की पंक्ति में वीर नाथूराम जी का बलिदान स्मरणीय है। वीर नाथूराम का जन्म 1 अप्रैल 1904 को हैदराबाद सिंध प्रान्त में हुआ था। पंजाब में उठे आर्य समाज के क्रांतिकारी आन्दोलन से आप प्रभावित होकर 1927 में आप आर्यसमाज में सदस्य बनकर कार्य करने लगे। उन दिनों इस्लाम और ईसाइयत को मानने वाले हिन्दुओं को अधिक से अधिक धर्म परिवर्तन कर अपने मत में सम्मिलित करने की फिराक में रहते थे । 1931 में अहमदिया (मिर्जाई) मत की अंजूमन ने सिंध में कुछ विज्ञापन निकाल कर हिन्दू धर्म और हिन्दू वीरों पर गलत आक्षेप करने शुरू कर दिए। जिसे पढ़कर आर्यवीर नाथूराम से रहा न गया और उन्होंने ईसाईयों द्वारा लिखी गयी पुस्तक 'तारीखे इस्लाम' का उर्दू से सिन्धी में अनुवाद कर उसे प्रकाशित किया और एक ट्रैक लिखा जिसमे मुसलमान मौलवियों से इस्लाम के विषय में शंका पूछी गई थी। ये दोनों साहित्य नाथूराम जी ने निशुल्क वितरित किए थे। इससे मुसलमानों में खलबली मच गयी। उन्होंने भिन्न भिन्न स्थानों में उनके विरुद्ध आन्दोलन शुरू कर दिया। इन हलचलों और विरोध का परिणाम हुआ की सरकार ने नाथूराम जी पर अभियोग आरंभ कर दिया। नाथूराम जी ने कोर्ट में यह सिद्ध किया की प्रथम तो ये पुस्तक मात्र अनुवाद है इसके अलावा इसमें जो तर्क दिए गए है वे सब इस्लाम की पुस्तकों में दिए गए प्रमाणों से सिद्ध होते है। जज ने उनकी दलीलों को अस्वीकार करते हुए उन्हें 1000 रूपये दंड और कारावास की सजा सुनाई। इस पक्षपात पूर्ण निर्णय से सारे सिंध में तीखी प्रतिक्रिया हुई। इस

- शेष पृष्ठ 8 पर

दिल्ली सभा की नवनिर्वाचित अन्तरंग सभा की प्रथम बैठक

रविवार : 18 जनरी, 2015 दोपहर 2:30 बजे

समस्त अधिकारियों, अन्तरंग सदस्यों एवं आमन्त्रित सदस्यों से निवेदन है कि बैठक में अवश्य ही भाग लेकर सभा संचालन में अपना सहयोग प्रदान करें।

- **धर्मपाल आर्य (प्रधान) 9810061763**

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 12 जनवरी से रविवार 18 जनवरी, 2015

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2015–2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 15/16 जनवरी, 2015

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2015–2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 14 जनवरी, 2015

पृष्ठ 7 का शेष

निर्णय के विरुद्ध चीफ कोर्ट में अपील करी गई। 20 सितम्बर 1934 को कोर्ट में जज के सामने नाथूराम जी ने अपनी दलीलें पेश करी। अब जज को अपना फैसला देना था। तभी एक चीख से पूरी अदालत की शांति भंग हो गई। अब्दुल कय्यूम नामक मतान्ध मुस्लमान ने नाथूराम जी पर चाकू से वारकर उन्हें घायल कर दिया जिससे वे शहिद हो गए। चीफ जज ने वीर नाथूराम के मृत देह को सलाम किया। बड़ी धूम धाम से वीर नाथूराम की अर्थी निकली। हजारों की संख्या में हिन्दुओं ने वीर नाथूराम को विदाई दी। अब्दुल कय्यूम को पकड़ लिया गया। उसे बचाने की पूरजोर कोशिश की गयी मगर उसे फांसी की सजा हुई।

आर्यसमाज के इतिहास में अनेक इस प्रकार की घटनाओं का उद्देश्य अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की रक्षा करना था मगर पाठकों के मन में एक शंका बार बार उठ रही होगी कि मकबूल फिदा हुसैन द्वारा हिन्दू देवी देवताओं की नग्न पेंटिंग के विरुद्ध जो प्रतिक्रिया हुई थी, 300 रामायण के नाम से रामानुजम् द्वारा रचित निबंध जिसे दिल्ली के विश्वविद्यालय में पढ़ाने पर प्रतिक्रिया हुई थी, सीता सिंग्स थी ब्लूज (sita sings the blues) नामक रामायण पर आधारित तथ्यों से विपरीत जो फिल्म बनी थी, आमिर खान द्वारा अभिनीत पीके जैसी फिल्में भी तो अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता है। फिर तो इनका विरोध करना मूर्खता है।

इस शंका का उत्तर अत्यंत स्पष्ट है। वह है इन सभी कार्यों को करने का उद्देश्य क्या है? किसी भी गलत तथ्य को गलत कहना सत्यता है जबकि किसी भी सही तथ्य को गलत कहना असत्यता है। आज जो ढोंग अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के नाम पर हो रहा है वह इसी श्रेणी में आता है। हिंदी देवी देवताओं की नग्न पेंटिंग के माध्यम से हुसैन कौन सा समाज सुधार कर रहे थे? रामानुजम की पुस्तक में लिखे एक तथ्य को पढ़िये। उसमें लिखा है लक्ष्मण की सीता माता पर टेढ़ी दृष्टि थी जबकि वाल्मीकि रामायण कहती है लक्ष्मण जी ने कभी सीता माता का मुख नहीं देखा था। उन्होंने केवल उनके चरण देखे थे जिन्हें वे प्रतिदिन सम्मान देने के लिए छूते थे। रामायण पर आधारित फिल्म में रामायण में वर्णित मर्यादा, पिता–पुत्र, भाई–भाई में परस्पर प्रेम के स्थान पर प्रक्षिप्त रामायण के भागों को दिखाना कहां तक उचित है? पीके फिल्म आस्था और श्रद्धा पर प्रश्न तो करती है मगर भटके हुओं को रास्ता दिखाने में असफल हो जाती है। जब आमिर खान यह कहता हैं कि मुझे ईश्वर के विषय में नहीं मालूम तब यह स्पष्ट हो जाता है कि फिल्म बनाने वाले को इसका उद्देश्य नहीं मालूम। इस प्रकार से यह फिल्म जिज्ञासु प्रवृति के व्यक्ति को असंतुष्ट कर नास्तिक बनने की प्रेरणा देती है।

अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता अत्यंत आवश्यक है मगर यह कार्य तभी संभव है जब इसे पक्षपात रहित विद्वान करे। पक्षपाती लोग अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता अन्यों के प्रति दुर्भावना के लिए जब जब करते है तब तब संसार का अहित होता है और होता रहेगा। पक्षपात रहित लोग समाज के कल्याण के लिए उद्घोष करते है तभी उन्हें समाज सुधारक की श्रेणी में गिना जाता है। आज देश को तोड़ने वाली शक्तियाँ, हिन्दू समाज में सामाजिक दूरियाँ पैदा कर उसे असंगठित करने के लिए अभिव्यक्ति के नाम पर उलटे सीधे प्रपंच कर समाज का अहित कर रही है। अभिव्यक्ति पर अंकुश होना दकियानूसी सोच है मगर अभिव्यक्ति का अनियंत्रित होना मीठे जहर के समान है। सदाचारी, पुरुषार्थी, धर्मात्मा मनुष्यों के हाथों में समाज का मार्गदर्शन होना चाहिए जिससे कि धर्म विरोधी, नास्तिक, भोग–विलासी, देशद्रोही ताकतों को अवसर न मिले। अंत में उन सभी महान आत्माओं को श्रद्धांजलि जिन्होंने समाज सुधार की अपेक्षा से अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के लिए अपने जीवन की आहुति दी।

लेख सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :-

महर्षि दयानंद सरस्वती का जीवन चरित्र- पंडित लेखराम, **आर्यसमाज और इस्लाम**- पंडित गंगाप्रसाद उपाध्याय, **श्यामजी कृष्ण वर्मा का जीवनवृत**- डॉ भवानीलाल भारतीय (हिंदी) एवं अंग्रेजी (इंदुलाल याजनिक), **ऋषि दयानंद सरस्वती के पत्र और विज्ञापन**- संपादक पंडित भगवत्त दत्त, युधिष्ठिर मीमांसक, **जनज्ञान मासिक पत्रिका बलिदान** अंक 1983, **रंगीला रसूल**- पंडित चमूपति रचित महाशय राजपाल द्वारा प्रकाशित, **सत्यार्थ भास्कर**- स्वामी विद्यानंद।

– ***डॉ. विवेक आर्य***

प्रतिष्ठा में,

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र0 राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए हरि हर प्रैस, ए–29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र–1, नई दिल्ली–28 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; टेलीफैक्स : 23360150; 23365959; IVRS : 011-23488888 E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : ब्र0 राजसिंह आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह